Department of Sanskrit
Hindu Kanya Mahavidyalaya, Jind
Event: Extension Lecture on Human Values in Vedas
7th February, 2024

हिंदू कन्या महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा वेदों में मानवीय मूल्य विषय पर ऑनलाइन माध्यम से विस्तार व्याख्यान का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्या डॉक्टर पूनम मोर की अध्यक्षता में किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की सहायक प्रवक्ता डॉक्टर नीलम रानी ने किया। व्याख्यान की मुख्य वक्ता महिला महाविद्यालय झोझू कला की सहायक प्रवक्ता डॉ. सुशीला कुमारी रहीं। उन्होंने कहा कि वैदिक वाङ्मय भारतीय समाज का अनुपम एवं अक्षय धन है। इस वाङ्मय में जिस प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान उपलब्ध होता है उसी तरह आधिभोतिक ज्ञान भी उपलब्ध होता है। माननीय मूल्य से हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। माननीय व्यवहार में मूल्य शब्द का अर्थ सहज जीवन, शुद्ध आचरण, आत्मसंयम, इन्द्रिय निग्रह, आत्मशुद्धि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। प्रेम, अहिंसा, नैतिकता, शील, संतोष, सत्य, लोक मंगल और लोक कल्याण की भावना भी मानवीय गुणों से ही सन्निहित है। इन गुणों से हमें शक्ति प्राप्त होती है। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजिका डॉक्टर नीलम रानी ने कहा कि प्राचीन काल से भारत में वेदों के अध्ययन की परंपरा रही है। वेदों से ही हमारी गुरु शिष्य परंपरा का आरंभ हुआ है, जिसमें गुरु का स्थान सर्वोपरि रहा है लेकिन आधुनिक युग में बच्चे इस परंपरा को भूलते जा रहे हैं। अतः इस प्रकार के व्याख्यान समय-समय पर होते रहने चाहिए जिससे हम अपने बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़कर रखें। कार्यक्रम को सफल बनाने में तकनीकी सहायिका श्रीमती विन्नी का विशेष योगदान रहा।

Glimpses & Media Coverage of the Event

पंजाब केसरी

वीरवार, 8 फरवरी, 2024.

संस्कृत विभाग द्वारा ऑनलाइन माध्यम से विस्तार व्याख्यान का आयोजन

जींद, 7 फरवरी (मित्तल) : हिंदू कन्या महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा ऑनलाइन माध्यम से विस्तार व्याख्यान का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. पूनम मोर की अध्यक्षता में करवाया गया।

व्याख्यान की मुख्य वक्ता महिला महाविद्यालय झोझू कलां की सहायक प्रवक्ता डॉ. सुशीला कुमारी रहीं। उन्होंने कहा कि वैदिक वाङ्मय भारतीय समाज का अनुपम एवं अक्षय धन है। इसमें जिस प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान उपलब्ध होता है, आधिभौतिक ज्ञान भी। माननीय मूल्य से हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है।

माननीय व्यवहार में मूल्य शब्द का अर्थ सहज जीवन, शुद्ध आचरण, आत्मसंयम, इन्द्रिय निग्रह, आत्मशुद्धि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। प्रेम अहिंसा, नैतिकता, शील, संतोष, सत्य, लोक मंगल और लोक कल्याण की भावना भी मानवीय गुणों से ही सन्निहित है। इन गुणों से हमें शक्ति प्राप्त होती है। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजिका डॉ. नीलम रानी ने कहा कि प्राचीनकाल से भारत में वेदों के अध्ययन की परम्परा रही है। वेदों से ही हमारी गुरु-शिष्य परम्परा का आरंभ हुआ है, जिसमें गुरु का स्थान सर्वोपरि रहा है लेकिन आधुनिक युग में बच्चे इस परम्परा को भूलते जा रहे हैं।

अतः इस प्रकार के व्याख्यान समय-समय पर होते रहने चाहिएं जिससे हम अपने बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़े रखें। कार्यक्रम को सफल बनाने में तकनीकी सहायिका विन्नी का विशेष योगदान रहा।

कार्यक्रम में जानकारी देते हुए मुख्य वक्ता। (मित्तल)